संगीत में ताल का महत्व

* रूचि रानी गुप्ता

काल क्रिया के नाप को ही ताल कहते है, जैसा अमर कोश में उल्लिखित है, 'तालः काल क्रिया मानम्' ताल संगीत को एक निश्चित नियम या समय के बन्धन में बांधता है।

संगीत दर्पण में तकार से शंकर या शिव और लकार से पार्वती या शक्ति दोनो का योग 'ताल' कहलाया –

तकारे शंकरः प्रोक्तो लकारे पार्वती स्मृता।
शिवशक्ति समायोगात्ताल नामाभिधीयते।। मृ0म0पृ0 27

संस्कृत पण्डितों की यह विशेषता रही है कि वे विभिन्न वर्णों का धातु रूप शब्द को देते हैं यहाँ परिमाण सूचक 'मा' धातु से मात्रा तथा रंजक चंद धातु से छंद शब्द का उद्भव हुआ है। विद्वानों का मत है कि ताल का धातु रूप 'तल' है, इसे हम भित्ति या बुनियाद कहते हैं। गीत वाद्य व नृत्य तीनों की प्रतिष्ठा ताल पर हुयी है संभवतः इसीलिए प्रतिष्ठावाचक धातुरूप तल से ताल शब्द बना हो सकता है।

''तालस्तल प्रतिष्ठायामिति घातोर्घत्रिस्मृतः।
गीत वांद्य तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठतम्'' ।।

विश्वविधाता द्वारा सृजित समस्त प्रकृति में समयक्रम की जो निश्चित गति है वही संगीत में ताल बनकर उसे उपयोगी, रसपूर्ण और स्थायी स्वरूप देती है।

उत्पत्यादि त्रयं यतस्तालेन जायते।
कीटकादि पशूनां च तालैन गतिर्भवेत्।।
यानि कानि च कर्माणि लोके तालाश्रितानि च
आदित्यादित गृहानाचं तालेनवैव गतिर्भवतेत्।।

जिस प्रकार नानाविधि पुष्पों का सूत्र में पिरोकर माला के रूप में गुस्फित कर दिया जाता है उसी प्रकार ताल रूपी धागे में स्वर, अलंकार

* शोध छात्रा, संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

रूपी प्रसूनों को क्रमबद्ध कर संगीतज्ञ अपने श्रोताओं के सम्मुख संगीत का एक मनोहारी तथा आकर्षक रूप प्रस्तुत करता है।

ताल के प्रतिबन्ध के कारण ही भारतीय संगीतज्ञ को राग विस्तार के लिए सहारा मिलता है। लय को विभागों, तालों आदि में विभाजित कर दिया जाता है और ताल के इन्हीं अंगों की सहायता से एक गायक वादक या नर्तक यह सहज ही ज्ञात कर लेता है कि वह गायन वादन या नर्तन के मध्य किस स्थान पर है यह जानकर वह सम पर मिल पाता है। अतः संगीत में दक्षता के लिए ताल का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है।

"The Indian tala or time measure is more difficult to master than the melody or raga itself. But since the raga must be sing strictly in tala, a person cannot in any sense be said to know Indian music until he masters the techniques of the tal."

ManiShankar

''स्वर के किंचित स्खलित संगीत भी ताल की जीवन शक्ति के कारण रसिकों को अप्रिय नहीं लगता, किन्तु सस्वर मधुर संगीत भी बेताल होने पर अप्रिय हो जाता हैं किचिंत बेसुरा होना मार्ग पर एक साधारण ठोकर लगना है किन्तु किंचित बेताल होना मार्ग पर फिसल कर गिर पड़ने के समान है ठोकर खाकर संभल जाने वाले पर अन्य पथिकों की दृष्टि उतनी आकृष्ट नही होती जितनी मार्ग पर अव्यवस्थित फिसलकर पड़े हुए दयनीय व्यक्ति पर होती है।'' —डॉ0 अरूण कुमार सेन

विभिन्न संगीत ग्रन्थों में वर्णित ताल की परिभाषायें –

(1) **ताल शब्दस्य निष्पत्तिः प्रतिष्ठार्थेनधातुना।**
गीतं वांद्य च नृत्यं च भाति ताले प्रतिष्ठितम्।

— संगीत मकरन्द

अर्थात् ताल का धातु रूप तल जिसे भित्ति या बुनियाद कह सकते है। गीत वाद्य तथा नृत्य तीनों की प्रतिष्ठा ताल पर हुई है।

(2) **तालस्तल प्रतिष्ठायमिति धातोधत्रिस्मृतः।**
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं यतस्ताले प्रतिष्ठितम्।।

— संगीत मकरन्द

(3) **तांडवस्याद्यवर्णेन लकारो लास्य शब्दभासाक।**
यदा संगच्छते लोके तदा तालः प्रकीर्तितिः।।

– संगीतार्णव

ताण्डव (पुरुष) 'नृत्य' से 'ता' तथा लास्य (स्त्री) नृत्य से ल वर्ण के संयोग से ताल शब्द की व्युत्पत्ति होती है।

(4) **ताकारे शंकरः प्रोक्तो लकारे पार्वती स्मृता।**
शिवशक्ति समायोगात्ताल नामामिधीयते।।

– संगीत दर्पण

तकार से शंकर और लकार से पार्वती या शक्ति योग से ताल बनी।

(5) **हस्तद्वयस्य संयोगे वियोगे चापि वर्तते।**
वयाप्तिमान् यो दशप्राणै स कालस्तालसंज्ञकः।।

– रागार्णन

तल शब्द के साथ अन् प्रत्यय द्वारा ताल शब्द की व्युत्पत्ति हुई

(6) **तकार शरजन्मा सयादाकारो विष्णुरुच्यते।**
लकारो मारूतः प्रोक्तस्ताले देवा बसन्ति ते।।

'त' कार शरजन्मा अर्थात् कार्तिकेय, 'आ' कार विष्णु एवं 'ल' कार मारूत इन तीनों देवताओं द्वारा अधिष्ठित शब्द ताल है।

(7) **कालस्य एकद्वित्रयादिमात्राोच्चारण।**
नियमितस्य क्रियायाः परिस्पन्दनामिकायाः परिच्छेदहेतुस्तालः।।

ता, धित्, धू, न्ना आदि शब्दों के द्वारा अखण्ड कालगति को छन्दं या पदों में विभाजित करने के जो प्रयोग हुए उन्हे ही ताल कहा गया ।

दुहिणेन यदन्विष्टं प्रयुक्तं भरतेन च
महादेवस्य पुरतस्तन्मार्गाख्यं विवुधैर्मतम्।

ताल की विशेषताएं –

(1) ताल अखण्ड एवं निस्समी काल का वह खण्ड होता है जिसका प्रयोग संगीतार्थ (गायन, वादन, नृत्य) किया जाता है।

(2) ताल चक्रीय या आवर्तित होते है।

(3) प्रत्येक ताल का अपना एक आकार, व्यक्तित्व, स्वरूप, छन्द जाति व लय है जो उसी रूप में आकर्षक लगता है।

(4) ताल की मूलभूत इकाई मात्रा है।

(5) तरल प्रदर्शित करने का एकमात्र साधन क्रियायें अर्थात् सशब्द ताली व निशब्द खाली है जो हाथ से या वाद्यों के माध्यम से की जाती है।

(6) ताल में सम का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है ताल की पहली मात्रा को सम कहते हैं। गायन या वादन में प्रारम्भ किसी भी मात्रा से करें समाप्ति सम पर होती हैं

(7) गायन वादन व नृत्य का 'ताल' आधार स्तम्भ है।

(8) ताल में सौन्दर्य बोध कराने की स्वाभाविक क्षमता है जो संगीत के किसी भी अंग अर्थात् गायन, वादन व नृत्य तीनों के रूप को द्विगुणित कर प्रभावशाली व मोहक बना देता है। 'ताल' सांगीतिक काल मापन का एक अमूर्त पैमाना है जो संगीत रूपी इमारत का एकमात्र पत्थर है जिसके आधार पर संगीत के तीनो स्तम्भ गायन, वादन व नृत्य दृढ़ता व स्थिरता को प्राप्त करते हैं।

साहित्य में छन्द का व संगीत में ताल का जन्म स्वाभाविक रूप से हुआ होगा। आदिमानव ने कल–कल निनादिनी नदियों में, निर्झरो के शाश्वत प्रवाह में, क्रमिक सूर्योदय व सूर्यास्त में ऋतुओं के नियमित चक्र में, जीवन के क्रमिक विकास में इन्ही छन्दो या तालों का अनुभव किया होगा। इन्ही लयों की गति भाषा का आश्रय लेकर साहित्य में छन्द बन गयी और संगीत में ताल बनकर प्राण फूंकने लगी। मानव सभ्यता के साथ ही हृदय की उत्तेजना व उल्लास का नृत्य में चित्रण हुआ। बर्बर मानव जानवरो को मारकर उन्हे कच्चा या भूनकर खाते हुए आनन्द से ताली बजाते हुए नृत्य करता था। समय की इन्ही गतियों के विभिन्न मापों में संगीतकारों ने स्वरों को और साहित्यकारो ने शब्दो में पिरोकर आगे और समृद्ध किया। वैज्ञानिक

प्रभावों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि समस्त ब्रह्माण्ड लय गति से बंधा हआ है। दैनन्दिन जीवन में मानव, पशु–पक्षी , चर–अचर सभी निश्चित समय अपना कार्य करते हैं समय अखण्ड है किन्तु उसकी उपयोगिता की वृद्वि के लिए उसे घन्टो, प्रदरो, दिनों, महीनो एवं वर्षो में विभाजित किया गया है। पृथ्वी, सूर्य की एक प्रदक्षिणा चौबीस घण्टों में करती हैं नदियों के ज्वार भाटे में भी एक निश्चित क्रम है विश्वविधाता द्वारा सृजित समस्त प्रकृति में समय क्रम की जो निश्चित गति है वहीं संगीत में ताल बनकर उसे उपयोगी, सम्पूर्ण और स्थायी रूप देती है।

संगीत रत्नाकर व नारदार्थ रागमाला के निम्नांकित श्लोक में कहा गया है कि जिस प्रकार देह में मुख प्रधान है और मुख में नासिका उसी प्रकार तालविहीन संगीत नासिकाविहीन मुख के समान है :

मुख प्रधान देहस्य नासिका मुख्या–मध्यके।
तालहीनं तथा गीतं नासाहींन मुखं यथा।।म.ह.पु.–2

गीत वाद्य एवं नृत्य की तुलना मदमस्त हाथी से कर ताल को अंपुश की उमा दी गयी है।

तौर्यत्रिकं च मत्तेभस्तालस्तस्यांकुंश विटुः।।
सं.द.ता.६पृ.।।

भक्ति रत्नाकर के रचियता श्री नरहरि चक्रवर्ती जी का कथन है जिस प्रकार बिना पतवार के नाव होती है, वैसे ही तालविहीन संगीत होता है एवं तालविहीन संगीत अशुद्ध संगीत है।:

गीते तालयुक्त ताल, बिना शुद्धि नय।
जैहे कर्णधार बिना नौका तैछे हम।।

संगीत मासिक पत्रिका के अगस्त 2006 के अंक में श्री राकेश कुमार अहिरवार ने ताल की उपादेयता इस प्रकार स्पष्ट की है –

संगीत मे ंताल की उपादेयता निम्न बिन्दुओं से स्पष्ट की जा सकती है –

(1) ताल संगीत को नियंत्रित कर एक निश्चित बन्धन में बाँधता है।
(2) ताल विहीन संगीत अधूरा प्रतीत होता है।

(3) ताल की विभिन्न लयकारियों तथा विभिन्न गायन शैलियों के साथ प्रयुक्त विभिन्न तालों द्वारा ही गायन व वादन की शोभा है।

(4) ताल में एक चमत्कारिक गुण विद्यमान है।

(5) तालबद्ध स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से हम दुर्लभ लिपियों को हमेशा के लिए सुरक्षित रख सकते हैं।

(6) जिस प्रकार गायन से रस निष्पत्ति की जाती है उसी प्रकार ताल द्वारा भी रस निष्पत्ति को गतिभेद व छंदभेद उत्पन्न कर सम्भव बनाया जा सकता है।

किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है कि अनिबद्ध या तालविहीन संगीत अरण्यक संगीत है तथा निबद्ध या तालयुक्त संगीत सामाजिक संगीत है। बिना ताल के केवल स्वरों का आनन्द हृदय में उल्लास व उत्तेजना का सृजन करने में असमर्थ होता है एवं अनिबद्ध संगीत के निरन्तर श्रवण से हृदय में उदासीनता छा जाती है। ध्रुपद या ख्याल गायको के विस्तृत तालहीन आलापो में 'लीयते परमानन्दे यथात्मा सा परा कक्षा की अभिव्यक्ति हेतु ही संभवतः मृदंग या तबले की थाप पर संभवतः अनिबद्धता की समाप्ति को दर्शाते है एवं ज्यो ही ताल शब्द व स्वरों का समन्वय होता है, रसिक मन उल्लसित और उत्तेजित हो उठता है गायक वाहक के मस्तक संचालन को श्रोताओं की सहानुभूति प्राप्त होती है। संगीत में छन्द और ताल ही यथाभूर्तः स्वरों को गति प्रदान करते है काल क्रिया के नाम को ही ताल कहते है जैसा अमर कोश में उल्लिखित है तालः कालक्रियामानम्'। ताल संगीत को एक निश्चित नियम या समय के बन्धन में बांधता है जिस प्रकार जीवन मे निश्चित समय क्रम का अभाव सुख व समृद्धि का अभाव है, उसी प्रकार तालहीन विश्रखल संगीत में सार्थकता नहीं। ताल, संगीत में विभिन्न सौन्दयपूर्ण चलन शैलियों का विकास करता है, जिससे संगीत के संयम की रक्षा होती है। ताल संगीत को अनुशासित कर उसके अपठित रूप, स्थायित्व एवं चमत्कारिता से श्रोताओं को विभोर कर देता है। ताल के ही कारण प्राचीन व वर्तमान संगीत को स्वर बोललिपि तालिपि द्वारा भविष्य के लिए

सुरक्षित रखना संभव हुआ है। निश्चित ताल गति के द्वारा ही संगीत के क्रमिक आरोह–अवरोह व विराम आदि अत्यन्त प्रभावोत्पादक हो जाते हैं। तालों में गति भेद उत्पन्न कर रस–निष्पत्ति सम्भव होती है। करूण, श्रंगार, रौद्र, वीभत्स आदि रसो के लिए तालों की विभन्न गतियों का बड़ा महत्व है।

संदर्भ –

(1) संगीत मासिक पत्रिका, अगस्त 2001 अंक, बैजनाथ प्रसाद
(2) संगीत कला विहार, नवम्बर 2003 अंक, डॉ0 नलिन सुन्दरम् भट्ट
(3) संगीत मासिक पत्रिका, जुलाई 2005 अंक, राकेश कुमार अहिरवार
अगस्त 2006 अंक, राकेश कुमार अहिरवार
दिसम्बर 2007 अंक, कु0 प्रतिभा श्रीवास्तव
(4) तबला पुराण, विजय शंकर मिश्रा
(5) ताल प्रकाश, भगवत शरण शर्मा
(6) ताल कोश, गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव
(7) ताल प्रबन्ध, पं0 छोटे लाल मिश्रा